कोविड–19 महामारी
और
भारतीय व्यवस्थाएं

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

कोविड–19 महामारी
और
भारतीय व्यवस्थाएं

सम्पादक
डॉ0 धीरज सिंह
विभागाध्यक्ष, शिक्षा शास्त्र विभाग,
मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
मोहन नगर, गाजियाबाद।

नमूना SAMPLE

अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स
दिल्ली (**भारत**)

प्रकाशक

अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

हेड ऑफिस : ए–108, स्ट्रीट न0. 1/3,
कौशल पुरी, दिल्ली–110094 (भारत)

Phone : 9643620664, 8744955183
E-mail : adhyayapublishers@gmail.com,
adhyayapublishers@yahoo.com
Website : www.adhyayabooks.com

कोविड–19 महामारी और भारतीय व्यवस्थाएं

संस्करण : 2021

© **सम्पादक**

ISBN: 978-93-91284-03-9

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक एवं सम्पादक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

विरेन्द्र कुमार यादव 'अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स' के द्वारा प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

समर्पण



विनम्र, सौम्य, कर्तव्यनिष्ठ, आदर्श व विद्वान शिक्षक
फूफा जी स्व0 श्री शिव विहार सिंह जी
एवं
धर्मनिष्ठ, परिश्रमी, साहसी, विदुषी व ममता से परिपूर्ण
स्मृति शेष बुआ जी स्व0 श्रीमती ललिता सिंह जी
की पावन स्मृति में सादर समर्पित।

नमूना • SAMPLE

सम्पादकीय

मानवीय सभ्यता के विकास की कहानी मानवों के संघर्षशील प्रवृत्ति, जिजीविषा, एवं विषम परिस्थितियों में धैर्य धारण करने की क्षमता का परिचायक है। आज मानव विकास के उच्च शिखर पर विराजमान है। आज इसके पास यात्रा के साधन के रूप में पवनगति से चलने वाली बुलेट ट्रेन है तो लक्जरी कारों का बेड़ा भी है।

पलक झपकते ही उसको शीघ्रता के साथ एक ही दिन में दुनिया के किसी कोने में पहुँचाने वाले वायुयान हैं। हजारों मील दूर बैठे अपने प्रियजनों को देखने व बातचीत करने के लिए अब उसके पास अनेक संसाधन हैं। उसकी जेब में अब हाई स्पीड इंटरनेट क्षमता से सम्पन्न स्मार्ट फोन रहता है जिसकी कार्य क्षमता और कुशलता ने पूरी दुनिया अपनी मुट्ठी में कर लेने का अहसास उसे दिया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उसने जो खोजें की हैं उससे मानव जीवन बहुत सुगम हो गया है। मेडिकल के क्षेत्र में भी अभूतपूर्व विकास मानव ने किया है। मानव को अपनी इन उपलब्धियों पर घमंड भी है। उसके इस घमंड या गर्व की भावना ने उसे स्वयं को सर्व शक्तिमान मानने की ओर प्रेरित कर दिया। विकास की इस होड़ ने वैश्विक स्तर पर गलाकाट प्रतिस्पर्धा को भी जन्म दिया। मानव ने अधिकतम विकास करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों एवं प्रकृति का अंतहीन शोषण किया है। मानव की अंतहीन विकास की राह पर चलने की प्रवृत्ति ने उसे स्वार्थी, विवेकहीन और अन्धा बना दिया है।

SAMPLE

विकास की इस प्रतिस्पर्धा में मानव यह भूल गया कि प्राकृतिक संसाधनों को पुनः निर्मित नहीं किया जा सकता है। यदि उनका विवेकपूर्ण इस्तेमाल नहीं किया गया तो वे समाप्त हो जाएंगे। प्राकृतिक संसाधन सम्पूर्ण मानव जाति ही नहीं बल्कि समस्त प्राणियों के लिए धरोहर है। इन संसाधनों का समाज सम्मत व विधि सम्मत सदुपयोग करते हुए इनके संवर्धन एवं संरक्षण हेतु सतत प्रयत्नशील होना चाहिए जिससे की आने वाली पीढ़ियों तक ये संसाधन पहुँच सके। किन्तु मानव वर्तमान में जीते रहने की जिद में यह भूल गया। इन संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से प्राकृतिक संतुलन भी बिगड़ा जिससे समय–समय पर अनेक समस्याएं देखने को मिल जाती हैं। समस्याएं उसे कभी प्राकृतिक आपदाओं के रूप में तो कभी बीमारी और कभी महामारी के रूप में देखने को मिलती है।

आज सम्पूर्ण मानव सभ्यता एक ऐसी ही महामारी से जूझ रहा है जिसे कोरोना महामारी का नाम दिया गया है। कोरोना महामारी एक विषाणु जनित महामारी है जिसका उत्पत्ति स्थल चीन का वुहान शहर माना जाता है। इस वायरस का प्रकोप सर्वप्रथम वुहान में दिसम्बर, 2019 में देखने को मिला। भारत में सर्वप्रथम जनवरी, 2020 में इसका संक्रमण देखने को मिला। चीन के पश्चात् कोविड–19 का व्यापक प्रकोप पूरे यूरोप, अमेरिका, ब्राजील, ईरान सहित दुनिया के लगभग सभी देशों में देखने को मिला। भारत में कोविड–19 का प्रभाव मार्च, 2020 से दिखाई पड़ने लगा। भारत सरकार ने अनेक पाबंदियां लगाते हुए सभी अंतर्राष्ट्रीय उड़ाने बंद कर दी। देश में सार्वजनिक यातायात के सभी साधनों पर रोक लगा दी गई थी। 24 मार्च, 2020 की शाम को प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेंद्र मोदी जी ने देश में 21 दिन का प्रथम लॉक डाउन घोषित किया गया जो 25 मार्च, 2020 से लेकर 14 अप्रैल तक चला। इसके बाद क्रमिक रूप से तीन अन्य चरणों में लॉकडाउन की घोषणा हुई। सम्पूर्ण लॉकडाउन (25 मार्च, 2020 से लेकर 31 मई, 2020) के दौरान पूरे देश में अभूतपूर्व तालाबंदी थी। जीवन का पहिया थम गया था। इसके पश्चात् देश की बिगड़ी स्थितियों को

सँभालने के लिए 1 जून, 2020 से अनलॉक की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। धीरे–धीरे पाबंदियों को समाप्त कर देश की व्यवस्था को पटरी पर लाने का सफल प्रयास किया गया। जनवरी, 2021 आते–आते सभी कोरोना महामारी को लगभग भूल चुके थे। भारतीय जनजीवन सामान्य हो रहा था। देश की आर्थिक स्थिति संभल चुकी थी।

सभी देशवासी कोरोना की काली यादों से आगे निकल रहे थे। अर्थव्यवस्था पटरी पर आ रही थी। देश में एक ओर कुम्भ का आयोजन हो रहा था तो दूसरी ओर होली का त्यौहार भी 29 मार्च, 2021 को पूरे पारम्परिक तरीके से हर्षोल्लास एवं जोश के साथ मनाया गया। लेकिन इसके साथ ही कोरोना की दूसरी लहर भी दस्तक दे रही थी। पांच राज्यों के विधान सभा चुनाव, विशेष कर बंगाल के चुनाव पर पूरे देश की निगाहें लगी हुई थी, संपन्न होने थे। 27 मार्च, 2021 से लेकर 29 अप्रैल 2021 तक कुल आठ चरणों में बंगाल के चुनाव थे। इसी के साथ उत्तर प्रदेश के त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव भी संपन्न होने थे। विश्व विद्यालयी व बोर्ड की वार्षिक परीक्षाओं का भी सम्पादन होना था। कुछ परीक्षाएं हो गई थीं किन्तु अधिकतर शेष थी। इन सब परिस्थितियों में कोरोना की दूसरी लहर का आना देश के लिए किसी बड़े दुर्भाग्य से कम नहीं था विधान सभा चुनाव के परिणाम 2 मई, 2021 में घोषित हुए। इसके बाद केंद्र सरकार और प्रांतीय सरकारें हरकत में आईं। किन्तु तब तक परिस्थितियाँ बहुत बिगड़ चुकी थी। देश में कोरोना की दूसरी लहर ने झकझोर कर रख दिया था। मार्च 2020 से लेकर मई, 2021 का यह कालखंड, जिसमे कोरोना के प्रकोप से पूरे देश की व्यवस्थाओं को हिलाकर रख दिया, भारतीय इतिहास में एक स्याह कालखंड के रूप याद किया जाएगा। भविष्य में समय कब सही होगा? कोई नहीं जानता। जनता कर्फ्यू और लॉकडाउन का जो दौर देश में चल रहा है, देश इससे कब बाहर निकलेगा कोई नहीं जानता। 16 जनवरी, 2021 से देश में 45 वर्ष से अधिक आयुवर्ग के लिए देश में टीकाकरण प्रारम्भ था और अब 1 मई से देश में 18 वर्ष आयु से अधिक के लिए भी टीकाकरण प्रारम्भ हो चुका है।

किन्तु इस बीच देश ने बहुत कुछ सहा है। देश के आम नागरिकों को अनेक ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ा जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती है। देश की सभी व्यवस्थाएं बुरी तरह से प्रभावित हुई हैं। आशा है भविष्य में स्थितियां सामान्य होंगी। कोरोना का यह कालखंड और इसका प्रभाव आने वाले समय में सभी भारतीयों को आने वाली समस्याओं से आगाह करता रहेगा तथा इस प्रकार की महामारी से निपटने का मार्ग भी प्रशस्त करेगा।

कोरोना के इस भयानक कालखंड में भारतीय व्यवस्थाओं पर पड़ने वाले प्रभावों को ध्यान में रखते हुए **कोविड–19 महामारी और भारतीय व्यवस्थाएं** शीर्षक से एक पुस्तक के सम्पादन किया जा रहा है। इस पुस्तक में विभिन्न विद्वानों, शिक्षकों और शोधार्थियों ने कोरोना काल के अपने अनुभवों को शोध आलेख के माध्यम से साझा किया है। इस पुस्तक में देश के विभिन्न भागों से हिन्दी भाषा में प्राप्त कुल 29 लेखों को शामिल किया गया है। इस प्रकार यह पुस्तक कुल 29 आलेखों की संचयिका होगी।

इस समकालीन व प्रासंगिक विषय पर अपने आलेख के माध्यम से सहयोग देने के लिए सही विद्वानों, शिक्षक साथियों, शोधार्थियों व अध्येताओं को धन्यवाद और आभार। विभिन्न विद्वानों द्वारा उपरोक्त विषय पर अभिव्यक्त विचारों को पुस्तकाकार रूप देने के लिए अध्याय पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स का भी धन्यवाद एवं आभार। प्रस्तावित विचार को पुस्तकाकार रूप देने में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी बने सभी सहयोगियों व आत्मीय स्वजनों को भी हृदय से आभार सहित धन्यवाद। अपनी पत्नी डॉ0 रेनू सिंह एवं अपने दोनों पुत्रों अद्वैत और अथर्व के प्रति विशेष प्रेमपूर्ण आभार।

सम्पादक
डॉ0 धीरज सिंह
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,
मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
मोहन नगर, गाजियाबाद।

प्रो. बीना शर्मा
निर्देशक,
केंद्रीय हिन्दी संस्थान,
आगरा उत्तर प्रदेश



केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)
हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा-282 005
CENTRAL INSTITUTE OF HINDI, AGRA
(MINISTRY OF EDUCATION, GOVT. OF INDIA)
HINDI SANSTHAN MARG, AGRA-282 005
क्षेत्रीय केंद्र : दिल्ली, हैदराबाद, गुवाहाटी, शिलांग, मैसूर, भुवनेश्वर, दीमापुर, अहमदाबाद
REGIONAL CENTRES : DELHI, HYDERABAD, GUWAHATI, SHILLONG, MYSORE, BHUBANESWAR, DIMAPUR, AHMEDABAD

दिनांक : 01.06.2021

कोविड-19 और भारतीय व्यवस्थाएँ

भूमिका

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। वह हर क्षण प्रसन्न रहना चाहता है। प्रसन्नता स्वास्थ्य की पहली शर्त है। स्वास्थ्य को हज़ार नेमत से बढ़कर माना गया है। इसलिए योग व्यायाम वर्जिश के साथ संतुलित भोजन को आहार विहार में सम्मिलित किया गया है। जब जब नियमों से विचलन होता है। हारी बीमारी का प्रवेश होता है। दवाई दारू लेनी होती है और व्यक्ति ठीक हो जाता है।

लगभग डेढ़ वर्ष से पूरा विश्व कोविड-19 महामारी से पीडित है। न जाने कितने घरों के चिराग बुझ गये, कितनी सुहागिनों का सिंदूर छिन गया, कितने भाइयों की कलाई सूनी हो गई, बच्चे अनाथ हो गये, परिवार बिखर गये। अभी ये विश्व इस विभीषिका से जूझ रहा है। ऐसे समय में हर प्रभावित व्यक्ति, समाज, संस्था, देश आर्थिक सहायता और मानसिक संबल के लिए दूसरों का मुँह जोह रहा है।

रचनाकार का दायित्व ऐसे समय में बहुत बढ़ जाता है कि वह विभिन्न लेखों के माध्यम से पाठकों के मध्य संवेदना जगा सके। कोविड-19 और भारतीय व्यवस्थाएं पुस्तक इस कठिन समय में एक आशा की किरण बन कर उभरी है। जिसमें बतीस लेखों का संकलन है। ये लेख सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, आर्थिक प्रभाव, महिलाओं, शिक्षकों, बच्चों, किशोरों, युवाओं, प्रौढ़ों, बुजुर्गों पर प्रभाव, वाहन चालकों, पर्यटन, परिवहन व्यवस्था, होटल व्यवस्था, कुटीर उद्योग, सरकारी योजनाएँ, स्वास्थ्य विभाग, ऑनलाइन व्यापार और लेनदेन, शहरी और ग्रामीण जीवन, रोजगार, दिहाड़ी मज़दूर, पर्यावरण, धार्मिक मान्यताएं, सामाजिक परंपराएं, धर्म, संस्कृति, साहित्य, योग, आयुर्वेद, मानव कल्याण, गांधी दर्शन और जीवन शैली से जुड़े हुए हैं। इस दिशा में भारत सरकार द्वारा उठाये गये आवश्यक और अनिवार्य कदमों की चर्चा भी है। कोविड से बचाव हेतु टीकाकरण की स्थिति को भी लक्षित किया गया है। पुस्तक वैचारिक लेखों का संचयन है।

इस पूरे परिवेश ने सबसे अधिक शिक्षा जगत को प्रभावित किया है। ऑनलाइन शिक्षण तो हो रहा है, पर इसके लिए पूर्ण दक्षता का अभाव है। छात्रों से व्यक्तिगत संपर्क टूटा है। अभी तक शिक्षण कार्य में अध्यापक और विद्यार्थी ही सम्मिलित थे अभिभावक यदाकदा शिक्षक अभिभावक बैठक का हिस्सा होते थे लेकिन ऑनलाइन में तो अभिभावकों की पैनी नज़र शिक्षकों पर है। निश्चित ही अध्यापकों को अपने शिक्षण के प्रति सजग और सतर्क होना होगा।

अब लेखों के विषय में कुछ बातें आलेख की विषय-वस्तु परिमाण से कहीं अधिक संदर्भ ग्रंथों की भरमार है। आलेख मूलतः सैद्धांतिक और परिचयात्मक है। व्यवहार परक सुझावों की कमी खलती है। आलेखों में यदि सुझावात्मक निर्देश शामिल कर लिए गए होते तो पुस्तक और अधिक प्रामाणिक होती। अभी उसमें संशोधन के बहुत अवसर हैं। यह सुखद है कि कोविड-19 महामारी का परिचय और भारत में इसके प्रभाव को विभिन्न लेखों में सुगढ़ तरीके से गुम्फित किया है।

इस सुरुचिपूर्ण कार्य के लिए संपादक और लेखक दोनों बधाई के पात्र हैं।

(प्रो. बीना शर्मा)
निदेशक

Website : www.khsindia.org Phone : 0562-3554938 (D), 0562-3554936 (R)
E-mail : directorkhs1960@gmail.com ; registrarofficekhs1960@gmail.com

नमूना • SAMPLE

विषय–सूची

सम्पादकीय vii

भूमिका xi

भाग–1
कोविड–19 और भारतीय शिक्षा व्यवस्था

1. भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर कोरोना महामारी का प्रभाव 3
–डॉ० धीरज सिंह

2. उच्च शिक्षा के क्षेत्र में कोरोना का प्रभाव
(भारत के सन्दर्भ में) 19
–डॉ० नीरज कुमार सिंह, डॉ० बबिता सिंह,

3. कोरोना महामारी के दौरान भारतीय शिक्षक और विद्यार्थी 30
–डॉ० अनामिका सिंह

4. कोरोना महामारी में ऑनलाइन शिक्षण से जुड़ी
स्कूल शिक्षकों की समस्याएँ 38
–डॉ० समता सिंह

5. कोरोना महामारी के दौरान उच्च शिक्षा के शिक्षकों
द्वारा अनुभूत की गई समस्याएं एवं चुनौतियाँ 51
–डॉ० जितेन्द्र कुमार पयासी

SAMPLE

6. कोविड–19 में उच्च शिक्षा क्षेत्र में ऑनलाइन शिक्षण भ्रम और अनिश्चितता : भारत के संदर्भ में 59
–डॉ० विजीश रोनित साइमन

7. कोरोना महामारी में बदलते शिक्षा के आयाम व स्वरूप 66
–पारूल रानी

8. वैश्विक महामारी : शिक्षकों की चुनौतियाँ से रूबरू 74
–रवि कान्त वर्मा

9. शिक्षा प्रणाली पर कोविड–19 महामारी का प्रभाव भिव्यंजक विवेचना 85
–राजेश कुमार सिन्हा

भाग–2
कोविड–19 और आर्थिक, पर्यावरणीय व मनोवैज्ञानिक प्रभाव

10. भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोरोना वायरस महामारी का प्रभाव 95
–डॉ० राजेश मौर्य, प्रो० जे. पी. मित्तल

11. वैश्विक महामारी के दौरान भारत में औद्योगिक विनिर्माण की सम्भावनाएँ : एक समीक्षात्मक अध्ययन 114
–प्रो० गुलशेर अहमद, डॉ० दयानन्द चौरसिया

12. कोविड 19 महामारी का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव और सुधारात्मक उपाय 119
–विरेन्द्र कुमार सैनी

13. कोविड–19 का आर्थिक प्रभाव 126
–संतोषकुमार

14. कोविड–19 का पर्यावरण पर प्रभाव 133
–डॉ० शुभा बाजपेयी

SAMPLE

15. कोविड–19 का मनोवैज्ञानिक प्रभाव एवं इसके निदान 139
–जिशुरानी चांगमाइ

भाग–3

कोविड–19 और महिलाएँ

16. कोविड–19 का महिलाओं पर प्रभाव : एक विश्लेषण 147
–मनीष कुमार सैनी

17. कोविड–19 और पुरूष एवं महिला लैगिंक संवेदनशीलता : एक अध्ययन 156
–लालबिहारी कुशवाहा, शिवबिहारी कुशवाहा

भाग–4

कोविड–19 और भारतीय व्यवस्थाओं के अन्य विविध पक्ष

18. योग का मानव शरीर संस्थान पर प्रभाव 167
–डॉ० अनीता चौधरी

19. भारतीय आयुर्वेदिक रसोईः कोविड–19 के विरुद्ध अदृश्य रक्षक 177
–डॉ० मनोज पाटीदार

20. कोविड–19ः भारत की आत्म निर्भरता की समग्रता का विश्लेषणात्मक विवेचन 186
–डॉ० हंसकुमार शर्मा

21. वायरस केन्द्रित फिल्मों के आईने में भारतीय सिनेमा 200
–मुकेश कुमार मिरोठा

22. कोविड–19 एवं भारत की कानून व्यवस्था 212
–अमोल मेश्राम

23. कोविड–19 और साहित्य 221
–शाहिद हुसैन

24. वैश्विक स्तर पर भारत की अहम भूमिका : कोविड–19 के संदर्भ में 229
–डॉ० विजीश रोनित साइमन

SAMPLE

25. कोविड–19 का ग्रामीण जीवन पर प्रभाव 235
–कैलाश सोलंकी

26. कोविड–19 के परिप्रेक्ष्य में भारतीय इतिहास एवं इतिहास लेखन 240
–डॉ० रोहताश जमदग्नि

27. कोविड–19 और हिन्दी भाषा साहित्य 260
–नरेश कुमार

28. कोविड–19 महामारी के दौरान मीडिया की भूमिका और उसके प्रभाव 266
–डॉ० रजनी शर्मा, सीमा शर्मा

29. कोविड – 19 का हिंदुस्तानी संगीत क्षेत्र पर प्रभाव 275
–स्वप्निल चंद्रकांत चाफेकर

सहायक सूची **284**

नमूना • SAMPLE

भाग–1
कोविड–19 और भारतीय शिक्षा व्यवस्था

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

अध्याय

1

भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर कोरोना महामारी का प्रभाव

डॉ० धीरज सिंह

भूमिका

मानवीय सभ्यता के विकास का रथ अनवरत चलते हुए आज 21वीं सदी में पहुँचा है। आज मानव अपने को बहुत शक्तिशाली महसूस कर सकता है क्योंकि अब उसके पास गगनचुम्बी इमारतें हैं, वायु की गति से चलने वाले वायुयान हैं, व्यापक सन्देश संचार के साधन हैं जो दुनिया में अलग–अलग कोने में बैठे दो अनेक व्यक्तियों को एक साथ जोड़ कर संपर्क स्थापित कर देते हैं, परमाणु क्षमता से संपन्न समृद्ध आयुध कोष है जो पल भर में किसी शहर या देश का नामोनिशान मिटा सकते हैं, स्वास्थ्य सेवाओं हेतु उत्तम संसाधन हैं आदि–आदि। इस प्रकार आज मानवीय सभ्यता के पास अनेक ऐसे उदाहरण हैं जिस पर वे गर्व महसूस कर सकते हैं। किन्तु विकास के इस पायदान पर पहुँच कर भी आज मानव सभ्यता एक छोटे से विषाणु द्वारा जनित महामारी के आगे पस्त और परास्त हो गई है। इस विषाणु का नाम है कोविड–19 और इसके द्वारा जनित महामारी को कोरोना महामारी का नाम दिया गया है।

दिसंबर 2019 में चीन के वुहान शहर से निकल कर इसने पूरी दुनिया में अपना आतंक फैलाया। भारत भी इससे अछूता नहीं रहा। जनवरी 2020 में भारत में पहला कोरोना से संक्रमित मरीज मिला। मार्च 2020 में कोरोना के संक्रमण ने भारत में रफ्तार पकड़ी। किन्तु भारत सरकार द्वारा अपने गए रोकथाम के उपाय और इसके प्रसार को रोकने हेतु लगे

SAMPLE

लॉक डाउन तथा भारतीयों द्वारा बरती गई सावधानियों से कोरोना का असर कम प्रभावी रहा। किन्तु मार्च 2021 में कोरोना की दूसरी लहर ने भारतीयों को बुरी तरह से प्रभावित किया। भारतीय शिक्षा व्यवस्था भी इससे अछूती नहीं रही है। प्रस्तुत आलेख में कोरोना कालखंड में शिक्षा पर पड़े प्रभावों का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर कोरोना महामारी का प्रभाव

शिक्षा किसी भी सभ्य समाज की रीढ़ होती है। शिक्षा की मजबूत नींव पर समाज व राष्ट्र खड़ा होता है। समाज व राष्ट्र में होने वाले परिवर्तनों से शिक्षा व्यवस्था में भी बदलाव होता है साथ ही शिक्षा में हुए परिवर्तनों का प्रभाव समाज व राष्ट्र पर भी पड़ता है। आज हमारा देश व समाज कोरोना महामारी से जूझ रहा है। इस महामारी ने समाज की जीवन धारा को बदल नहीं दिया बल्कि तहस–नहस कर दिया हैं कोरोना महामारी ने भारतीय समाज की दशा एवं दिशा को बहुत प्रभावित किया है। शैक्षिक व्यवस्था भी उसके प्रभाव से अछूती नहीं रही है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर कोविड–19 के पड़ने वाले प्रभाव को निम्न बिंदुओं द्वारा समझा जा सकता है–

- शिक्षण संस्थाओं पर प्रभाव
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पर प्रभाव
- शिक्षकों पर प्रभाव
- विद्यार्थियों पर प्रभाव
- वार्षिक परीक्षाओं पर प्रभाव
- मूल्यांकन एवं वार्षिक परीक्षा फल पर प्रभाव
- प्रवेश परीक्षा, प्रवेश प्रक्रिया पर प्रभाव
- शिक्षणेत्तर कर्मचारियों पर प्रभाव
- अन्य प्रभाव यथा बालिकाओं की शिक्षा पर प्रभाव, कोचिंग संस्थानों का प्रभाव, अभिभावकों पर प्रभाव, संस्थान प्रबंध तंत्र पर प्रभाव आदि।

शिक्षण संस्थाओं पर प्रभाव

शिक्षण संस्थानों पर लॉकडाउन घोषित होने के पहले कोरोना महामारी की मार पड़ी। भारत के अधिकतर शिक्षण संस्थान 15 मार्च 2020 से बंद कर दिए गए थे जो संपूर्ण लॉकडाउन (25 मार्च, 2020 से 31 मई, 2020) के दौरान बंद रहे। इस लॉकडाउन के दौरान जो अर्ध शहरी ग्रामीण व अन्य पिछड़े इलाकों के छोटे–छोटे शिक्षण संस्थान थे, उनके समक्ष वित्तीय संकट उत्पन्न हो गया क्योंकि इन विद्यालयों में पढ़ने वाले अधिकतर बच्चों के अभिभावक छोटी आय वाले किसान या दिहाड़ी मजदूर होते हैं। शहरी क्षेत्रों में जो पिछड़े क्षेत्र एवं मलिन बस्तियों में विद्यालय थे उनके समक्ष भी यही प्रश्न था। अधिकतर अभिभावक शहर छोड़कर अपने गांव की ओर पलायन कर गए। ऐसी स्थिति में इन विद्यालयों के समक्ष वित्तीय संकट से उबरने का कोई विकल्प नहीं बचा था। बड़े व स्थापित विद्यालयों की स्थिति इससे भिन्न थी क्योंकि उनके विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी समाज के उच्च–मध्य या उच्च वर्ग से आता था और उनके अभिभावकों की आर्थिक स्थिति पर कोरोना का बहुत अधिक प्रभाव नहीं पड़ा। प्राथमिकताओं का भी अंतर यहां था। मजदूर वर्ग के समक्ष सबसे पहले जीवनयापन का प्रश्न था शिक्षा उसके बाद का प्रश्न थी, किंतु स्थापित व बड़े विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के अभिभावकों के समक्ष रोजी–रोटी का प्रश्न नहीं खड़ा हुआ था। इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि समाज का कोई वर्ग कोरोना के प्रभाव से अछूता रहा हो। 1 जून 2020 से पूरे देश में अनलॉक की प्रक्रिया प्रारंभ हुई किंतु सरकार द्वारा विद्यालयों को नहीं खोलने के निर्देश थे। अनलॉक के चौथे चरण (1 सितम्बर, 2020 से 30 सितम्बर, 2020) में विद्यालयों को आंशिक रूप से खोलने के दिशा निर्देश जारी किए गए। इसमें विद्यार्थी स्वैच्छिक रूप से माता–पिता की स्वीकृति लेकर विद्यालय में शिक्षकों से दिशा निर्देशन के लिए आ सकता था। विद्यालय में प्रवेश के लिए सरकार द्वारा स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर जारी किया गया था जिनका पालन विद्यार्थियों एवं शिक्षकों द्वारा किया जाना था। इसके पश्चात अनलॉक के अन्य चरणों में विद्यालयों के लिए दिशानिर्देश जारी होते रहे। शिक्षकों द्वारा ऑनलाइन शिक्षण चलता रहा किंतु विद्यालय शिक्षण कार्य हेतु नहीं खुले। आंशिक

रूप से बड़ी कक्षाओं 9, 10, 11 एवं 12 के विद्यार्थियों को बुलाने का प्रयास हुआ किंतु न विद्यार्थियों ने रुचि दिखाई और ना ही अभिभावकों ने। इस प्रकार विद्यालय अपनी क्षमता अनुसार शिक्षण कार्य हेतु नहीं खुल सके। जनवरी बीत रही है दिल्ली सरकार ने फिर 18 जनवरी से आंशिक रूप से कक्षा 9 से 12 तक के बच्चों को बुलाने का प्रयास प्रारंभ कर दिया है। महाविद्यालयों एवं व्यवसायिक संस्थानों में भी अब विद्यार्थियों की आवाजाही प्रारंभ हो गई है किंतु पहले वाला ना जोश है और ना ही उल्लास और ना ही कोई उत्साह है। पूर्व प्राथमिक व प्राथमिक स्तर के विद्यार्थी अभी भी घरों में है और ऑनलाइन शिक्षण माध्यम से शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। आशा है हिंदू नव वर्ष में स्थितियाँ सामान्य हो जाएंगी एवं हमारे शिक्षण संस्थान पुणे पूरी क्षमता आशा उल्लास उत्साह उमंग से खुल सकेंगे और हमारे राष्ट्र के भावी नागरिक खुले मन, मस्तिष्क व हृदय से शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे।

कोरोना की दूसरी लहर की दस्तक ने स्थितियों को और बदतर बना दिया है। मार्च 2021 से कोरोना ने फिर देश में पैर पसारना प्रारम्भ कर दिया है। 15 अप्रैल आते–आते देश में स्थिति भयावह हो गई है। भारत में कोरोना के मामलों में जबरदस्त उछाल देखने को मिल रहा है। केंद्र सरकार और राज्य सरकारों ने कोरोना से निपटने के लिए अलग–2 तरीके से अलग–अलग प्रकार की पाबंदियां लगा दी हैं। पुनः प्रत्येक शिक्षण संस्थान बंद हैं। भविष्य में क्या होगा कोई नहीं जानता।

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पर प्रभाव

कोरोना आपदा के कारण भारतीय शिक्षा व्यवस्था पर बहुत नकारात्मक प्रभाव पड़ा। शिक्षण संस्थान बंद होने से हमारी शिक्षण अधिगम प्रक्रिया पूर्णरूपेण रुक गई थी। किंतु संघर्षशील व जुझारू शिक्षकों ने शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को गति देने का पुनः बीड़ा उठाया। शिक्षकों ने ऑनलाइन शिक्षण पद्धति को शिक्षा का माध्यम बनाते हुए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को पुनः प्रारंभ किया। एक प्रकार से कहें तो शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को नया पंख लग गया ऑनलाइन शिक्षण पद्धति के द्वारा। पारम्परिक शिक्षण प्रणाली से शिक्षा की दूरी ऑनलाइन शिक्षण पद्धति की ओर मुड़ गई। छोटे–बड़े सभी चाहे वह स्कूल हो या कॉलेज सभी ने विद्यार्थियों से जुड़ने

व उनकी शिक्षण प्रक्रिया प्रारंभ करने के लिए ऑनलाइन शिक्षण माध्यमों को चुना। इसके अतिरिक्त कोई अन्य विकल्प भी तो नहीं था। कोरोना महामारी जैसी आपदा काल में शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को संचालित करने के लिए ऑनलाइन माध्यम एक सशक्त विकल्प बना। विपरीत परिस्थितियों में मजबूरी में चुना गया यह विकल्प भविष्य की उम्मीद के रूप में देखा जाने लगा है। ऑनलाइन शिक्षण की महत्ता को देखते हुए भारत सरकार राज्य सरकार एवं विश्वविद्यालयों ने ऑनलाइन शिक्षण हेतु अनेक व्यवस्था भी की है। ऑनलाइन शिक्षण पद्धति ने कोरोना से पस्त शिक्षा व्यवस्था को नया जीवन दिया है। कुछ कमियों के साथ लोगों ने इसे अब अपना लिया है। शिक्षक का विकल्प ना होकर शिक्षक के सहायक के रूप में ऑनलाइन शिक्षण पद्धति एक बेहतर विकल्प साबित हो सकती है। आने वाले समय में ऑनलाइन शिक्षा का क्षेत्र व्यापक व विस्तृत होगा। ऑनलाइन शिक्षा का प्रसार शहरी क्षेत्रों के साधन संपन्न शिक्षण संस्थानों शिक्षकों व विद्यार्थियों के मध्य भली प्रकार हुआ किंतु ग्रामीण व पिछड़े क्षेत्रों में ऑनलाइन शिक्षा अभी भी अव्यवहारिक बनी हुई है। कोरोना कालखंड में शिक्षण अधिगम के तौर तरीके बदले हैं विद्यार्थी और शिक्षक वास्तविक कक्षाओं से दूर हैं किंतु ऑनलाइन माध्यमों द्वारा दोनों अपनी सक्रिय उपस्थिति दर्ज कर रहे हैं। ऑनलाइन शिक्षा एक तात्कालिक विकल्प के रूप में बेहतर साबित हुई है किंतु सदा सर्वदा के लिए उपयुक्त नहीं हो सकती।

शिक्षकों पर प्रभाव

शिक्षा एक दो ध्रुवी प्रक्रिया है जिसके दो महत्वपूर्ण ध्रुव हैं – शिक्षक और विद्यार्थी। शिक्षक किसी भी राष्ट्र का निर्माता होता है। वह कक्षा में विद्यार्थियों को नहीं पढ़ाता बल्कि देश के भविष्य को सँवार कर उसे स्वरुप प्रदान करता है। इस महामारी ने शिक्षकों को भी बहुत प्रभावित किया है। कोरोना का यह कालखण्ड विशेष रूप से प्राइवेट या स्ववित्तपोषित शिक्षण संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के लिए यह एक भयानक विपत्ति का अवसर था। प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक के क्षेत्र में प्राइवेट/ स्ववित्तपोषित संस्थानों में कार्यरत सभी शिक्षकों के जीवन दशा व दिशा बदल चुकी है।

इस आपदाकाल में बहुत से विद्यालयों ने अपने ने वहां कार्यरत शिक्षकों को कार्यमुक्त कर दिया। शिक्षकों के वेतन रोक दिए गए या 10 से लेकर 50 प्रतिशत की कटौती कर दी गई है। अनेक शिक्षण संस्थान ऐसे भी थे जिन्होंने शिक्षकों का कई माह का वेतन ही निर्गत नहीं किया। परिस्थितियां ऐसी बन गई कि शिक्षक के पास कोई विकल्प नहीं बचा। वेतन के अभाव में वे अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियां पूरी करने में असफल रहे। बहुत से शिक्षकों के बच्चों को विद्यालय से निकाल दिया गया या परीक्षा देने से रोक दिया गया क्योंकि उनकी फीस उनके अभिभावक जमा नहीं कर पाए। अनेक शिक्षक ऐसे भी रहे जो इस समय के मानसिक दबाव को बर्दाश्त नहीं कर सके और आत्महत्या का रास्ता चुनते हुए अपनी जीवन लीला ही समाप्त कर ली या कई ऐसे भी शिक्षक रहे जिनका मानसिक संतुलन इन परिस्थितियों में बिगड़ गया। प्राइवेट संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों के लिए ये महान उत्पीड़न का काल था। अनेक शिक्षक अभी भी गहरे मानसिक अवसाद से गुजर रहे हैं। शिक्षकों के लिए यह एक बहुत बुरा दौर साबित हुआ है।

इस कोरोनाकाल में ऑनलाइन शिक्षण का दौर प्रारम्भ होने पर ऐसे शिक्षक जो तकनीकी कौशलों में दक्ष नहीं थे उन्हें बहुत सी तकनीकि कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कुछ शिक्षकों ने प्रयास करके अपनी तकनीकी दक्षता बढ़ाते हुए ऑनलाइन कक्षाएं संचालित की। ऑनलाइन कक्षाओं हेतु आवश्यक तकनीकि उपकरणों का स्वयं प्रबंध कर शिक्षकों ने ऑनलाइन शिक्षण प्रक्रिया को गति प्रदान की। शिक्षक अभिभावकों के लिए भी यह कठिन दौर था क्योंकि ऑनलाइन कक्षाएं संचालित करने के दौरान उनके स्वयं के बच्चों की ऑनलाइन कक्षाएं समय और संसाधनों के अभाव में संभव नहीं हो पाईं। किन्तु इस कठिन समय में शिक्षकों ने हार न मानते हुए शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को ऑनलाइन माध्यम से प्रारम्भ किया और कोरोना महामारी के इस कठिन दौर में भी वे अपने विद्यार्थियों का हाथ व साथ न छोड़ते हुए अभिभावकों के मन में यह विश्वास कायम रख सके की शिक्षा की लौ को कभी बुझने नहीं देंगे। इस आपदा काल में भी शिक्षकों ने शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया को सुचारू बनाए रखा एवं ज्ञान की मशाल को पुनः प्रज्ज्वलित किया। उन्होंने अपने विद्यार्थियों को इस आपदाकाल में उपजे मानसिक संत्रास से टूटने नहीं

दिया। इस कठिन परिस्थिति में भी भारतीय शिक्षकों ने हार नहीं मानी और न ही अपने उत्तरदायित्व से मुँह मोड़ा।

शिक्षक राष्ट्र निर्माण के विश्वकर्मा है, यह बात इस आपदाकाल में शिक्षकों ने साबित करते हुए पूरी सजगता और तत्परता के साथ अपने उत्तरदायित्वों का निर्वाहन कर रहे हैं। किंतु आज समाज में शिक्षकों के साथ हो रहे इस अन्याय में उसके साथ कोई नहीं है। चाहे कोई राजनतिक दल हो या सामाजिक संगठन अथवा शिक्षकों के संगठन, किसी ने भी इस विषय पर आवाज नहीं उठाई। अनेक शिक्षण संस्थानों ने कोरोना महामारी के इस काल को धनार्जन का अवसर बना लिया है। शिक्षकों के प्रति इस अन्याय पर केंद्र और राज्य सरकारों ने भी अपनी आँखें बंद कर ली है। किसी राज्य की सरकार और न ही केंद्र सरकार ने इस आपदा काल में शिक्षकों की समस्याओं पर कोई ध्यान नहीं दिया। सबसे बड़ी बात यह है कि किसी शिक्षक संगठन ने भी शिक्षकों की इस दुर्दशा पर कोई आवाज नहीं उठाई।

आज की परिस्थिति में शिक्षक अकेला है और असहाय भी। समाज व राष्ट्र को दिशा देने वाला शिक्षक आज किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति में है। सरकार के पास स्ववित्तपोषित शिक्षकों के लिए कोई ठोस कार्य योजना नहीं है और न ही कोई निश्चित सेवा नियमावली। यदि कोई सेवा नियमावली बनी भी है तो वह केवल कागजी साबित हुई है, उस पर कोई अमल नहीं हुआ है। यदि किसी समाज या राष्ट्र में शिक्षक अपनी सेवाओं से संतुष्ट नहीं है और उसे यथोचित सामाजिक गरिमा नहीं प्राप्त है तो वह राष्ट्र या समाज विकास नहीं कर सकता। कोरोना की दूसरी लहर जो मार्च 2021 में प्रारम्भ हुई है पटरी पर आ रही व्यवस्थाओं को पुनः ध्वस्त कर दिया है। कोरोना की दूसरी लहर का कहर शिक्षकों पर बदस्तूर जारी है। हजारों की संख्या में शिक्षकों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। अभी कितनी आहुतियां कोरोना के विध्वंश में चढ़ेंगी कोई नहीं जानता।

आज आवश्यकता इस बात की है कि समाज के जिम्मेदार नागरिक, राजनेता, स्वयं सेवी संगठन, प्रशासनिक तंत्र के अधिकारी एवं सरकार सभी शिक्षकों को उसकी आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित करें और समाज में उसके योगदान को स्वीकार करें।